Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of HIStory
H. D. Jain College, Ara.

Notes For. M.A. Sem-III, CC-13, Unit-I

Topic – बंगाल का विभाजन एवं स्वदेशी आंदोलन :-

वायसराय लार्ड कर्जन ने बंगाल में बढ़ती राष्ट्रवाद व क्रांतिकारी गतिविधियों को छिन्न-भिन्न करने के उद्देश्य से बंगाल का विभाजन किया। बंगाल को दो प्रांतो में विभाजित कर दिया गया। पूर्वी बंगाल का हिस्सा मुस्लिम बहुल था। इसे पृथक करके असम में मिलाकर एक नया प्रांत बनाया गया। बचा हुआ बंगाल का हिस्सा हिन्दू शासित क्षेत्र जो वर्तमान बंगाल में सम्मिलित है, उसे अल्प प्रांत बना दिया गया।

बिहार तथा उड़िसा को दूसरे प्रांत बनाए गए। इस विभाजन को सही सिद्ध करने के लिए यह सफाई दी गई की बंगाल बहुत बड़ा प्रांत है, जिस पर एक सरकार को शासन करने में कठिनाई आती थी, इसलिए प्रशासन की सुविधा के लिए इसे विभाजित किया गया है। दूसरा यह आवश्यक हो गया था कि पूर्वी बंगाल जहाँ मुस्लिम समुदाय की बहुलता थी, उसके अधिक विकास के लिए बंगाल का विभाजन आवश्यक था।

राष्ट्रवादियों ने सरकार के इस विभाजन को तथा शासन की नीतियों को गंभीरता से लिया। बंगाल विभाजन के पीछे सरकार की नीति पूर्वी बंगाल में मुस्लिम समुदाय को पश्चिमी बंगाल के हिन्दुओं से पृथक करने की थी, इस विभाजन से दो समुदायों के बीच घृणा उत्पन्न करने का

⟶

→ प्रयास किया गया। यह प्रयत्न बंगाल में राष्ट्रवाद के विकास को कमजोर करने का प्रयत्न था।

बंगाल के विभाजन का बंगाल के लोगों पर इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने इस कार्य के विरुद्ध अपनी प्रतिक्रिया से पूरे भारत को प्रभावित करने में सफल हुए। 1905 ई० में बंगाल-विभाजन के विरोध में तीव्र आंदोलन शुरू हुआ, जो पूरे देश में फैल गया। विभाजन के दिन कलकत्ता में हड़तालों का आयोजन किया गया। विभाजन विरोधी आंदोलन ने ब्रिटिश सामान के बहिष्कार के साथ स्वदेशी आंदोलन को भी विकसित किया। राष्ट्रवादियों ने राष्ट्रीय शिक्षा के कार्यक्रम प्रारंभ किए। राष्ट्रवादियों द्वारा कई शिक्षण संस्थाएँ स्थापित की गईं।

घरेलु-उद्योगों को संगठित करके आत्मसम्मान के लिए स्वदेशी आंदोलन को अत्यधिक तीव्र बना दिया गया। स्कूल तथा कॉलेजों का बहिष्कार करके शिक्षा के परम्परागत पद्धतियों के आधार पर स्कूल तथा कॉलेज स्थापित किए गए। इस समय स्थापित महत्वपूर्ण संस्थानों में जादवपुर में स्थापित बंगाल प्रौद्योगिकी संस्थान है।